आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

19 सितम्बर, 2025

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि 'आओ हाथ बढ़ाएं–एक पहल मदद की' चैरिटेबल ट्रस्ट, मुरादाबाद, दिनांक 20 नवम्बर, 2025 को सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन कर रहा है।

भारतीय समाज में विवाह एक पवित्र संस्कार है, जो धर्मयुक्त दांपत्य जीवन की सामाजिक संरचना की आधारशिला है। सामूहिक विवाह का आयोजन नवविवाहित जोड़ों को सामाजिक एकता और सद्भाव के साथ संस्कारित होने का अनुपम अवसर प्रदान करता है।

मैं इस शुभ अवसर पर परिणय सूत्र में बंधने वाले सभी वर–वधूजनों के सुख–समृद्धि से परिपूर्ण दाम्पत्य जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

(आनंदीबेन पटेल)

सतीश महाना
अध्यक्ष
उ०प्र० विधान सभा

पत्र संख्याः- /अ०वि०स०/ , दिनांकः

विधान भवन, लखनऊ
फोन नं०-0522-2238161 (कार्या०)

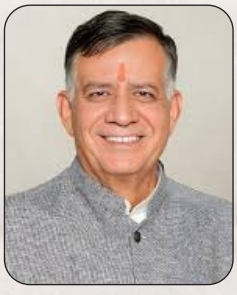

"शुभकामना संदेश"

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है आओ हाथ बढ़ाएं एक पहल मदद की चैरिटेबल ट्रस्ट, मुरादाबाद दिनांक 20 नवम्बर 2025 को सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन कर रहा है।

भारतीय समाज में विवाह एक पवित्र संस्कार है, जो कि धर्मयुक्त दाम्पत्य जीवन की सामाजिक संरचना की आधारशिला है। निर्धन बेटियों तथा उनके माता–पिता को इस प्रकार सहयोग प्रदान कर उनके उज्जवल भविष्य की दिशा में किया गया यह कार्य अत्यन्त सराहनीय है।

इस कार्य के लिए आओ हाथ बढ़ाएं एक पहल मदद की चैरिटेबल ट्रस्ट को मै अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(सतीश महाना)

गीतांजली पाण्डेय
अध्यक्ष
आओ हाथ बढ़ाएं एक पहल
मदद की चैरिटेबल ट्रस्ट, मुरादाबाद

D.O.No. Misc...../OSD/ MoS(Finance)/2025

अलकेश उत्तम, भा.रा.से.
ALKESH UTTAM, I.R.S.

सत्यमेव जयते

वित्त राज्य मंत्री के
विशेष कार्य अधिकारी
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
OFFICER ON SPECIAL DUTY TO
MINISTER OF STATE FOR FINANCE
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI-110001

06 NOV 2025

आदरणीय श्रीमती गीतांजली जी,

आपका दिनांक 15.10.2025 का पत्र प्राप्त हुआ जिसमें आपने माननीय वित्त राज्य मंत्री जी को मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश में आर्थिक रूप से कमजोर बेटियों के सामूहिक विवाह संस्कार में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया है, जिसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों तथा कार्यालयी व्यस्तता के दृष्टिगत मा. वित्त राज्य मंत्री जी उक्त कार्यक्रम में प्रतिभाग नहीं कर सकेंगे, जिसके लिए खेद है। मा. मंत्री जी कार्यक्रम की सफलता की कामना के साथ-साथ समस्त आयोजक मण्डल को भी शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

शुभेच्छा,

भवदीय,

(अलकेश उत्तम)

श्रीमती गीतांजली पाण्डेय,
पता – 7बी/37, बुद्धि विहार फेज-II,
निकट सेंट मेरी स्कूल, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

॥ श्रीहरिः ॥

गीताप्रेस

गोबिन्दभवन-कार्यालय, 151, महात्मा गाँधी मार्ग, कोलकाता का प्रतिष्ठान
(पश्चिम बंगाल सोसाइटी अधिनियम XXVI-1961 के अन्तर्गत पंजीकृत)
(सन् 1923 से सत्य एवं शान्ति-हेतु मानवमात्रकी सेवामें समर्पित संस्थान)
पो० गीताप्रेस, गोरखपुर–273005 (भारत)
मोबाइल नं० : 8188054401, 8188054405
website : www.gitapress.org / e-mail : manager@gitapress.org

दिनांक : 17-12-2025

चैरिटेबल ट्रस्ट 'आओ हाथ बढ़ाएं—एक पहल मदद की' के चार वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक शुभकामनाएँ

सेवा, सहयोग और संवेदनशीलता के भाव से प्रारम्भ हुई यह यात्रा आज चार वसन्त देख चुकी है। इन वर्षों में ट्रस्ट ने समाज के जरूरतमंद वर्गों तक मदद पहुँचाकर मानवता की सच्ची मिसाल कायम की है। शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक जागरूकता जैसे अनेक क्षेत्रों में किये गये कार्य सराहनीय और प्रेरणादायक हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि 'आओ हाथ बढ़ाएं—एक पहल मदद की' चैरिटेबल ट्रस्ट इसी प्रकार निरंतर आगे बढ़ता रहे, समाज में सकारात्मक बदलाव लाता रहे और अधिक से अधिक लोगों के जीवन में आशा की किरण बनकर उजाला फैलाता रहे।

चार वर्ष की इस सफल यात्रा पर ट्रस्ट से जुड़े सभी सदस्यों, सहयोगकर्ताओं एवं शुभचिंतकों को हार्दिक बधाई एवं अनंत शुभकामनाएँ।

सधन्यवाद!

भवदीय

लालमणि तिवारी

(लालमणि तिवारी)
व्यवस्थापक
गीताप्रेस, गोरखपुर
मो० नं०—9415379509

कार्यालय पुलिस अधीक्षक नगर, जनपद मुरादाबाद।

पत्रांकःवाचक–नगर–12/2025 दिनांकःजनवरी , 2026

"आओ हाथ बढ़ाएं–एक पहल मदद की" के 4 वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

समाज सेवा के क्षेत्र में आपका निरंतर समर्पण और निःस्वार्थ प्रयास अत्यंत सराहनीय है। यह ट्रस्ट जरूरतमंदों के जीवन में आशा, विश्वास और सकारात्मक बदलाव ला रहा है।

आशा है कि भविष्य में भी आप इसी तरह समाजहित में उत्कृष्ट कार्य करते रहेंगे।

सस्नेह!

04.01.26.

(कुमार रणविजय सिंह)
पुलिसअधीक्षक नगर,
जनपद–मुरादाबाद।

रितेश कुमार गुप्ता
भाजपा विधायक
२८-मुरादाबाद नगर
सदस्य –
- विकास व नियोजन स्थायी समिति
- स्थानीय स्वशासन संबंधी स्थायी समिति

विधानसभा – उत्तर प्रदेश

पत्रांक :.....

कार्यालय : बी-५१, गांधी नगर,
मुरादाबाद - २४४००१ (उ.प्र.)

ई–मेल : ritesh1161@gmail.com
मोबाइल : 94122 44566
फोन : 0591-3591353

दिनांक : 15/12/2025

शुभकामंना संदेश

आओ हाथ बढ़ांए एक पहल मदद की चैरिटेबल ट्रस्ट) को सेवा, समर्पण और मानवता की मिसाल बनते हुए चार वर्ष पूर्ण करने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

इन चार वर्षो में ट्रस्ट ने निः स्वार्थ भाव से जरुरतमंदो के जीवन में आशा की किरण जगाई है और समाज में सकरात्मक बदलाव की मजबूत नींव रखी है।

(रितेश कुमार गुप्ता)
रितेश कुमार गुप्ता
विधायक
28, मुरादाबाद नगर

ट्रस्ट के विशेष सहयोगी

श्री करन वीर सिंह

श्रीमती ज्योत्सना मुन्ज्याल

श्रीमती अनीता गुप्ता

श्रीमती नीलम कोठीवाल

श्री मनोज आहूजा

श्री नलिन गुप्ता

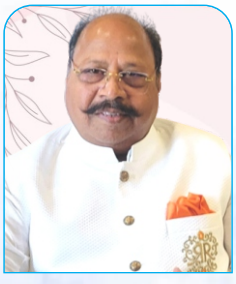
श्री राजेश रस्तोगी

श्री मार्कण्डेय मणि त्रिपाठी

श्री रूपक कुमार सिंह

श्री राकेश खन्ना

श्री मन्नु अग्रवाल

श्रीमती नीरज एवं संजीव जैन

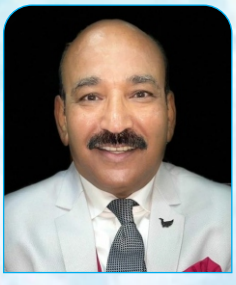
श्री यशपाल अरोड़ा

श्री ए.के. गुप्ता एवं मधु गुप्ता

डॉ. एस. के. गुप्ता

डॉ. दीपक मेन्दीरत्ता

ट्रस्ट के विशेष सहयोगी

श्री राजन अग्रवाल

श्रीमती रितु नारंग

श्रीमती शिखा मित्तल

सीए अभिनव अग्रवाल

श्री अनुज चौधरी

श्री मनोज चौधरी

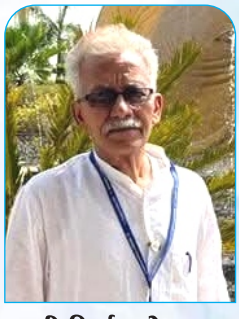

श्री निर्मल मेहता

ट्रस्ट के सहयोगी

श्री संजय पाण्डेय

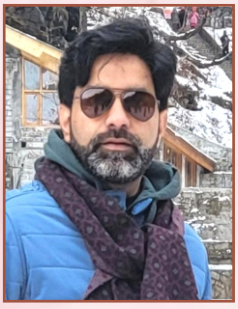
श्री प्रबल पन्त

श्री राघव रस्तोगी

श्री सोतेन्द्र गुर्जर

डॉ0 रीता खन्ना

श्रीमती प्रीती मोदी

श्रीमती रूबल तोदी

श्रीमती अमिता मेहरोत्रा

श्री मनोज साहनी

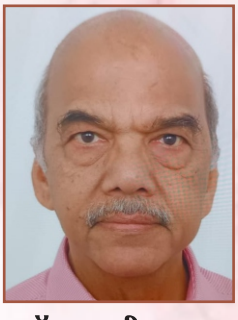
डॉ0 एस.पी. गुप्ता

डॉ0 विशेष गुप्ता

श्री सनी सेठी

श्री धीरज मेहता

श्री मयंक मेहता

श्री विनय दूबे

श्री अनिल मोहन तिवारी

ट्रस्ट के सहयोगी

श्री अंकुर अग्रवाल

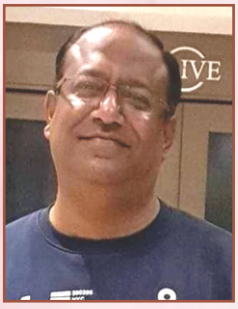
श्री अंकुर अग्रवाल

श्री अरविंद चौधरी

श्री अनिल मुल्तानी

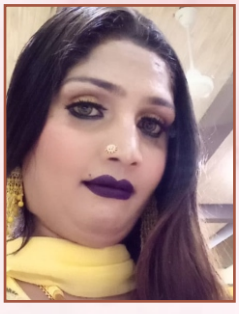
रूबी किन्नर

डॉ0 जया शर्मा

श्रीमती प्रियंका भटनागर

श्रीमती अनुभा गुप्ता

श्री नीटा धमीजा

श्री हर्षित रस्तोगी

श्री आशीष मदान

श्री मनोज सिंह

श्री प्रभाकर मणि त्रिपाठी

श्री विजय शर्मा

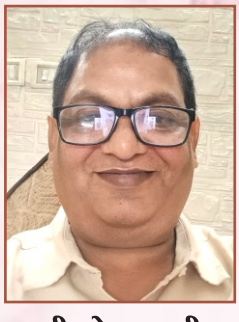
श्री गोपाल हरी

श्री अनुभव मिश्रा

श्री रचित गुप्ता

श्रीमती रश्मि गुप्ता

श्री पुनीत जैन

श्री आशीष चौधरी

श्री अंकुर गुप्ता

श्रीमती उमा शर्मा

सेवा, समर्पण और संकल्प की चार वर्ष की प्रेरक यात्रा

आओ हाथ बढ़ाएं – एक पहल मदद की (चैरिटेबल ट्रस्ट)

दिनांक 10 जनवरी 2022 को पंजीकृत हुआ आओ हाथ बढ़ाएं एक पहल मदद की (चौरिटेबल ट्रस्ट) इस वर्ष अपने चार सफल वर्ष पूर्ण कर चुका है। इन चार वर्षों की यात्रा में ट्रस्ट ने अपने नन्हे–नन्हे किंतु सशक्त कदमों के माध्यम से समाज में एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है।

बिना किसी सरकारी सहयोग के, केवल सेवा–भाव, ईमानदारी और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना के साथ ट्रस्ट निरंतर जनकल्याण के कार्यों में संलग्न रहा है।

ट्रस्ट का मूल उद्देश्य समाज के उन वर्गों तक सहायता पहुँचाना है, जो किसी न किसी कारणवश मुख्यधारा से वंचित रह जाते हैं। इसी उद्देश्य के अंतर्गत ट्रस्ट द्वारा संचालित निःशुल्क ट्यूशन सेंटर में बच्चों की शिक्षा को एक सुनियोजित स्वरूप दिया गया है। बच्चों के लिए व्यवस्थित क्लासरूम, उपयुक्त फर्नीचर, अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण तथा यूनिफॉर्म की व्यवस्था की गई है, ताकि उनमें किसी भी प्रकार की हीन भावना न उत्पन्न हो और वे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकें।

महिला एवं बाल सशक्तिकरण ट्रस्ट की प्राथमिकताओं में सदैव अग्रणी रहा है। ट्रस्ट द्वारा संचालित निःशुल्क सिलाई केंद्र के माध्यम से बच्चियों और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का कार्य किया जा रहा है। इसके साथ ही ट्रस्ट ने अपनी स्थापना के पहले दिन से ही जीने दो नामक महिला जागरूकता अभियान आरंभ किया, जो आज भी निरंतर चल रहा है। इस अभियान के अंतर्गत समाज में महिलाओं से जुड़ी समस्याओं, बढ़ती सामाजिक कुरीतियों, बालिकाओं की सुरक्षा एवं सम्मान जैसे विषयों पर निरंतर संवाद किया जाता है। कार्यक्रमों के माध्यम से लड़कियों, बच्चियों को गुड टच और बेड टच के विषय में जागरूक किया जाता है, ताकि वे स्वयं को सुरक्षित रखने के प्रति सजग हो सकें। इसके अतिरिक्त जरूरतमंद बच्चियों की शिक्षा, रोजगार एवं उनके विवाह तक की जिम्मेदारी भी ट्रस्ट अपने स्तर पर निभाता है, जिससे वे सम्मान और आत्मविश्वास के साथ जीवन जी सकें।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी ट्रस्ट पूर्णतः जागरूक है। समय–समय पर पौधारोपण, पौधों की देखभाल और बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य भावी पीढ़ी में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना विकसित करना है।

गीतांजली पाण्डेय
संस्थापिका / अध्यक्ष

ट्रस्ट का एक अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरणादायक आयोजन मजदूर दिवस के अवसर पर आयोजित किया जाने वाला श्रमवीर एवं कर्मवीर सम्मान समारोह है। इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के उन नायकों को सम्मानित किया जाता है, जो पर्दे के पीछे रहकर समाज की बेहतरी के लिए निरंतर कार्य करते हैं। अब तक सैकड़ों मजदूरों, पुलिस एवं ट्रैफिक पुलिस कर्मियों, नर्सों, एंबुलेंस ड्राइवरों, वार्ड बॉय, आशा कार्यकर्ताओं को इस मंच से सम्मानित किया जा चुका है।

त्योहारों के अवसर पर भी ट्रस्ट जरूरतमंद परिवारों के बच्चों के साथ खड़ा रहता है। होली, दिवाली एवं अन्य पर्वों पर बच्चों को त्योहार से संबंधित सामग्री के पैकेट वितरित किए जाते हैं, ताकि वे भी उत्सव की खुशियों में सहभागी बन सकें। इसके अतिरिक्त बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण, नियमित हेल्थ चेकअप और स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। स्वच्छता अभियान के अंतर्गत स्वदेशी उत्पादों से युक्त हाइजीन किट का वितरण भी ट्रस्ट द्वारा किया गया है।

यह उल्लेखनीय है कि 'आओ हाथ बढ़ाएं – एक पहल मदद की' (चैरिटेबल ट्रस्ट) अपनी सेवाओं को केवल मुरादाबाद तक सीमित नहीं रखता, बल्कि आवश्यकता और सूचना मिलने पर लखनऊ, गोरखपुर जैसे अन्य शहरों तक भी जरूरतमंदों की सहायता के लिए सक्रिय रहता है। आर्थिक रूप से जरूरतमंद परिवारों की बेटियों का विवाह, आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को सहयोग तथा गंभीर रूप से बीमार लोगों के इलाज की व्यवस्था जैसे कार्य ट्रस्ट ने क्षेत्रीय सीमाओं से परे जाकर किए हैं। यह ट्रस्ट की मानवीय सोच और व्यापक सेवा–भाव का परिचायक है।

ट्रस्ट द्वारा वर्ष भर में औसतन 20 से 25 सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें नारी सशक्तिकरण, महिला जागरूकता अभियान, स्वास्थ्य सहायता एवं सामाजिक चेतना से जुड़े विषय प्रमुख होते हैं। कई जरूरतमंद एवं गंभीर रूप से बीमार लोगों का इलाज ट्रस्ट की सहायता से संभव हो पाया है। एक जरूरतमंद परिवार को ई–रिक्शा उपलब्ध कराकर आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास भी ट्रस्ट द्वारा किया गया है।

ट्रस्ट का सबसे बड़ा और भावनात्मक कार्यक्रम प्रत्येक वर्ष नवंबर माह में आयोजित सामूहिक विवाह समारोह है। इस आयोजन में आर्थिक रूप से कमजोर, अनाथ अथवा जिनके परिवार में कोई कमाने वाला नहीं होता, ऐसी 11 बेटियों का विवाह पूरे विधि–विधान और गरिमा के साथ संपन्न कराया जाता है। विवाह से पूर्व हल्दी, मेहंदी एवं संगीत समारोह का आयोजन किया जाता है तथा गृहस्थी आरंभ करने के लिए आवश्यक समस्त सामान बेटियों को उपहार स्वरूप प्रदान किया जाता है।

चार वर्षों की यह सेवा–यात्रा इस बात का प्रमाण है कि यदि संकल्प मजबूत हो और उद्देश्य समाज सेवा का हो, तो बिना सरकारी सहयोग के भी बड़े बदलाव संभव हैं। आओ हाथ बढ़ाएं, एक पहल मदद की (चौरिटेबल ट्रस्ट) आज भी उसी ईमानदारी, निष्ठा और सेवा–भाव के साथ समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सहायता पहुँचाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

हर जगह ईश्वर नहीं होता है लेकिन ईश्वर के निमित्त हर जगह होते हैं। हमें प्रयास करना चाहिए कि हम पर भी भगवद् कृपा हो और हम खुद को उनका (भगवान) निमित्त साबित करने में सफल हो पाएं। आज के जमाने में हर कोई अपनी अपनी जरूरतें पूरी करने में मशगूल है लेकिन फिर भी हमारे समाज में ऐसे लोग हैं जो मानवता की मिसाल हैं। ऐसे लोग भी हैं जो रात के अंधेरे में निकलकर जरूरतमंदों की मदद करते हैं और हम में से किसी को भनक तक नहीं लगती। हमारा भी प्रयास यही होना चाहिए कि हमारे आसपास कोई बच्चा भूखा ना सोए, कोई शिक्षा से वंचित न रहे, कोई दर्द से कराहने ना पाए, किसी की बेटी कुंवारी ना रहे, कोई बेघर ना रहे।

यह प्रयास कोई एक व्यक्ति अकेले नहीं कर सकता इसलिए हम सभी एक दूसरे के साथ मिलकर, कंधे से कंधा मिलाकर अपने आसपास, अपने पड़ोस में, अपने समाज में, अपने शहर में एक सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास करते रहना चाहिए।

क्योंकि कोई भी बदलाव हमारे घर से शुरू होकर बाकी सब जगह फैलता है। एक बार में किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती है, लेकिन अगर लगातार आप उसके लिए प्रयासरत रहेंगे तो कोई ना कोई नतीजा जरूर निकलेगा।

वतन की रेत मुझे एड़ियां रगड़ने दे ।
मुझे यकीन है पानी यहीं से निकलेगा ।।

अनुभव

किसी भी कार्य को करने के लिए पहले खुद पर भरोसा और अपने अंदर सकारात्मक ऊर्जा का होना बहुत आवश्यक है। यह दोनों चीज लेकर अगर आप कोई भी कार्य करने निकलते हैं तो सफलता निश्चित है।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव इस कार्य को लेकर बहुत ही सकारात्मक है। मैंने इस कार्य की शुरुआत अपने दो छोटे भाइयों के साथ शुरू की थी संजय मणि त्रिपाठी और राघव रस्तोगी।

यह कार्य हम तीनों लोगों ने बहुत समय तक बिना किसी बैनर के भी बहुत बड़े स्तर पर किया है। इस कार्य में सहयोग के लिए जिससे भी मदद मांगी उसमें से अधिकतर लोगों ने अपने मदद का हाथ आगे बढ़ाया। उन्होंने यह जानने की बिल्कुल कोशिश नहीं कि हम किस ट्रस्ट से हैं, किस फाउंडेशन से हैं, या किस समिति से हैं। उन्होंने सिर्फ हम पर भरोसा जताया और आज तक अपना भरोसा बनाए हुए हैं हम पर।

मेरी मुलाकात समाज के कुछ प्रतिष्ठित लोगों से हुई जिनसे हमें यह सीखने को मिला कि यह कहावत बिल्कुल गलत है कि ईश्वर जिन्हें धन देता है उन्हें दिल नहीं देता है। उन कुछ लोगों ने इस बात को सिरे से नकारने के लिए हमें प्रेरित किया। उन्होंने न सिर्फ हम पर भरोसा जताया बल्कि आगे बढ़कर हमारी मदद भी की। हमारा समाज आज भी ऐसे भले लोगों से ओत प्रोत है जिन्होंने समाज में दबे कुचले लोगों के लिए लीक से हटकर काम किया है।

घर में बैठकर किसी के काम में कमी निकालना या किसी अच्छे बदलाव की कल्पना करना बहुत आसान है, सक्षम होने के बावजूद भी उस तरफ से आंखें मोड़ लेना बहुत आसान है। लेकिन अपनी रातों की नींद हराम करके दूसरों के लिए जीना, दूसरों के दुख में दुखी होना, दूसरों के लिए आंसू बहाने के लिए बहुत बड़ा दिल होना चाहिए।

मैं और मेरी टीम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमारे इर्द–गिर्द सकारात्मक ऊर्जा देने वाले लोग हैं, जो हमें निरंतर न सिर्फ प्रोत्साहित करते हैं बल्कि आगे बढ़–चढ़कर अपना सहयोग भी देते हैं।

आखिर में हमेशा की तरह मेरे पिताजी के द्वारा लिखी गई कविता की दो लाइन आप सभी के लिए –

कभी न भूलो जब तुम आए जगत हंसा तुम रोए।
जियो कि जाते समय, सिर्फ तुम हंसो और जग रोए।।

▲▲▲

गीताप्रेस-लीला-चित्र मन्दिर-एक परिकल्पना एवं निर्माण

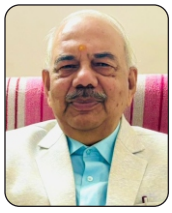

श्री लालमणि त्रिपाठी
प्रबंधक
गीता प्रेस, गोरखपुर

गीताप्रेसका कार्य प्रारम्भ होनेके बाद भगवत्–प्रेरणासे श्रीमद्भगवद्गीताके प्रचार–प्रसारमें लगे लोगोंके मनमें यह बात आयी कि भारतवर्षमें कहीं एक ऐसा स्थान होता, जिसमें भगवान् श्रीरामकी और भगवान् श्रीकृष्णाकी लीलाओंके, श्रीमद्भागवत, महाभारत तथा श्रीरामायणके वर्णनानुसार सुन्दर चित्र लीलानुक्रमसे संगृहीत होते, साथ ही भगवान् विष्णु, भगवान् शंकर तथा अन्यान्य देवी–देवताओंके विविध रूपोंके चित्र भी होते, मनमें बात आकर रह गयी। कुछ वर्षों बाद गीताप्रेसमें काम बढ़ जानेसे नया मकान बना, तब उसके ऊपर एक विशाल भवन बनाया गया। पहले सोचा गया कि उसमें कार्यालय रहेंगे, पर पीछे विचार बदला और उसमें सत्संग होता रहेगा यह निश्चय हुआ। भवन बन जानेपर पूरी श्रीमद्भगवद्गीता संगमरमर पत्थरपर खुदवाकर उसमें शीशा भरवाया गया और दीवालोंपर चारों ओर पूरी गीताके पत्थर क्रमसे जड़ दिये गये। इसीके साथ–साथ संत कबीर, तुलसीदास, दादू, सुन्दरदास, रहीम, नारायणस्वामी आदिके चुने हुए लगभग सात सौ दोहे–चौपाई आदि सुन्दर अक्षरोंमें भवनके बाहर भीतर दीवालोंपर लिखवाये गये। कोई योजना तो निश्चित थी ही नहीं, जैसे ये सब काम समयानुसार होते रहे, वैसे ही चित्रोंकी बात आयी और यह निश्चय हो गया कि चित्रोंको भी इसमें यथास्थान रखा जाय। 'कल्याण' के लिये वर्षोंसे चित्र बनवाये जा रहे थे। उनका बड़ा संग्रह था। उनमेंसे अच्छे–अच्छे चित्र चुने गये और बहुत–से नये चित्र भवनमें लगानेके लिये ही बनवाये गये। पुराने हस्तनिर्मित चित्र संग्रह किये गये। फिर सबपर फ्रेम लगवाकर उन्हें सजा दिया गया। कुछ नये चित्रोंका काम शेष था, उसे पूरा किया गया और उन चित्रोंके यथास्थान लगनेके उपरान्त हमारे भारतके प्रथम राष्ट्रपति महामहिम देशरत्न डॉक्टर श्रीराजेन्द्र प्रसादजीने वैशाख शुक्ला ८, विक्रम सं० २०१२, दिनांक २९ अप्रैल सन् १९५५ को प्रातःकाल गोरखपुर गीताप्रेसमें पधारकर इसका उद्घाटन करनेकी कृपा की। इस प्रकार यह अभूतपूर्व 'लीला–चित्रमन्दिर' बन गया।

लीला–चित्रमन्दिरकी विशेषता

इसमें भगवान् विष्णु, राम, कृष्ण, शंकर और देवीके सभी रूपोंके दर्शनीय चित्र हैं। इससे यह सभी आस्तिक सम्प्रदायोंके लिये बड़े कामकी वस्तु हो गया है। इन सभी दृष्टियोंसे यह 'लीला–चित्र–मन्दिर' सभी लोगोंके लिये सर्वथा दर्शनीय है। इसी दृष्टिसे इसका नाम 'लीला–चित्र–मन्दिर' रखा गया है। इस ढंगका चित्रमन्दिर भारतवर्षमें यह एक ही है। इसीलिये दूर–दूरसे लोग इसको देखनेके लिये नित्य आते रहते हैं।

इस लीला–चित्र–मन्दिरका भवन लगभग २० फुट ऊँचा तथा लगभग ७१०० स्क्वायर फुटके विशाल आकारका है। इसमें निम्नलिखित वस्तुएँ सुरक्षित हैं–

१. श्रीमद्भगवद्गीताके पूरे १८ अध्याय संगमरमरपर खुदे हुए दीवालोंपर लगे हैं। श्रीगीताके आदिमें एक सुन्दर जयपुरकी बनी रणाङ्गणमें रथपर विराजमान श्रीकृष्णार्जुनके गीता–संवादकी संगमरमरपर खुदी रंगीन मनोहर मूर्ति है।

२. बाहर और भीतर दीवालोंपर संतोंके लगभग सात सौ दोहे, चौपाई आदि लिखे हैं।

३. प्राचीन तथा अर्वाचीन गीताकी ११६७ पुस्तकें हैं। इनमें जगत की २२ भाषाओंमें मुद्रित गीताके संस्करण हैं। कई प्राचीन हस्तलिखित गीताकी सचित्र पुस्तकें भी हैं।

४. पूरी गीताका प्लास्टिकका बना एक स्तम्भ है, जिसके ऊपर रथ बना हुआ है जिसमें श्रीकृष्णार्जुन विराजमान हैं।

५. हस्तनिर्मित प्राचीन तथा अर्वाचीन चित्र हैं–

पाँच–सात चित्रोंको छोड़कर शेष सभी चित्र बहुरंगे हैं। कई चित्रोंमें सोनेका काम है तथा वे बड़े ही सुन्दर कलापूर्ण हैं।

▲▲▲

गीताप्रेस, गोरखपुरका संक्षिप्त परिचय

श्री लालमणि त्रिपाठी
प्रबंधक
गीता प्रेस, गोरखपुर

गीताप्रेस की स्थापना परतंत्र भारत में सन् 1923 में हुई थी। उस समय की सामाजिक परिस्थिति की तरफ दृष्टि डालें तो पता चलता है कि शदियों से देश पर मुगल आक्रान्ताओं और विधर्मियों का शासन था जिनका एक मात्र उद्देश्य हमारी संस्कृति और सभ्यता को नष्ट करना, हमारे उपासना स्थलों को तोड़ना, हमारे देवी देवताओं की मूर्तियों को खंडित करना, हमारी पूजा–पद्धतियों को ढ़ोंग बताना, हमारे धर्म गुरुओं को अपमानित करना तथा हमारे धर्म–ग्रन्थों को जलाना था।

सनातन धर्म पर संकट मँडराने लगा था। भयवश हिन्दू विरोध करने से कतराते थे। हमारे धर्म–ग्रन्थ लुप्त प्राय हो चुके थे। पूजा–उपासना के लिये हमारे देवी–देवताओं के प्रमाणिक चित्र तक उपलब्ध नहीं हो पा रहे थे। ऐसी परिस्थिति में सनातन धर्म के प्रचार–प्रसार की बड़ी आवश्यकता प्रतीत होने लगी थी। ऐसी धारणा बना दी गयी थी कि गीता पढ़ने वाला व्यक्ति संन्यासी हो जाता है, अथवा गीता संन्यासियों के पढ़ने का ग्रन्थ है। इस धारणा से बाहर निकलने, गीता प्रचार एवं आध्यात्मिक ग्रन्थों के प्रचार–प्रसार के लिये गीताप्रेस की स्थापना हुई।

उस समय गीता पर आचार्यों की टीका प्रायः संस्त में उपलब्ध थी जो सामान्य पढ़े–लिखे लोगों के समझ के बाहर थी। अन्वय, पदच्छेद के साथ प्रत्येक शब्दों के अर्थ जानने की रुचि पाठकों में थी, पर कोई अच्छी टीका हिन्दी में उपलब्ध नहीं थी। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये गीताप्रेस के संस्थापक परम श्रद्धेय ब्रह्मलीन जयदयाल गोयन्दका जी ने गीताजी की पदच्छेद, अन्वय के साथ सर्वजनोपयोगी टीका हिन्दी में तैयार की। इस तरह से देखा जाय तो श्रीमद्भगवद्गीताका प्रकाशन एवं प्रचार ही गीताप्रेसकी स्थापना की मूल प्रेरणा है।

गीताप्रेसका उद्देश्य

गीताप्रेसका मुख्य उद्देश्य ईश्वरप्रेम, सत्य, सदाचार और सद्भावोंके प्रचार–हेतु मानव–सेवार्थ सद्ग्रन्थों इत्यादिका प्रकाशन करना है।

परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दकाके मनमें यह भाव बड़ा प्रबल था कि हमलोगोंको गृहस्थाश्रममें ही सुख, शान्ति कैसे मिले तथा हमें भगवत्प्राप्ति हो सके। उनके एक ही लगन थी कि मानवमात्र इस भवसागरसे कैसे पार हो ?

साधक भाई–बहनोंकी एक धारणा बन गयी थी कि भगवत्प्राप्ति करनेके लिये एकान्तमें जाना, तीर्थस्थानमें जाना, वनमें जाना आवश्यक है। वहाँ जाकर कठोर परिश्रम, साधन–तपस्या करके ही भगवत्प्राप्ति सम्भव है। कई ऐसे प्रचलित भ्रम फैले हुए थे कि स्त्री, शूद्र, वैश्य एवं गृहस्थोंका कल्याण नहीं होता। माताएँ–बहनें पतिकी सेवासे, व्यापारी शुद्ध व्यापारसे, पुत्र पिताको सेवासे, शिष्य गुरुकी सेवासे, गृहस्थ अतिथि सेवासे भगवत्प्राप्ति कर सकते हैं। इन्हीं भावोंके प्रचार तथा भगवद्गीताके प्रचारके द्वारा मानवमात्रके कल्याणके उद्देश्यसे उन्होंने गीताप्रेस, गीताभवन, श्रीऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रमकी स्थापना की।

▲▲▲

सनातन धर्म, सोलह संस्कार, कन्यादान

डॉ रोहित मिश्र
साहित्य विभागाध्यक्ष,
गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ,
गोरखनाथ मंदिर गोरखपुर।

सनातन धर्म, वैदिक धर्म, ज्ञान परम्परा का अर्थ शाश्वत धर्म या नित्य धर्म यह संस्कृत शब्द है। नित्य को शाश्वत तथा धर्म का अर्थ है कर्तव्य नियम तथा धार्मिक जीवन के मार्ग को सनातन धर्म कहते है। सनातन धर्म वेद को प्रामाणिक तथा पवित्र प्राचीन माना गया है। सनातन धर्म ब्रह्म को सर्व भक्तिमान एवं सर्वव्यापी माना है जो संसार का मूल है। सनातन धर्म जीवन को महत्त्व देता है जिसमे व्यक्ति अपने कर्तव्यों एवं जिम्मेदारियों का पालन करता है। सनातन धर्म कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत को मानता है। जिससे व्यक्ति कर्मो के अनुसार अगले जन्म में सुख या दुःख पाता है। सनातन धर्म का अंतिम सोपान मोक्ष की प्राप्ति माना है जिससे व्यक्ति आत्मा की मुक्ति प्राप्त करता है। अतः सनातन धर्म मूल आधार है जीव मात्र का यह सम्मान होगा।

संस्कारो की संख्या हमारे सनातन धर्म में सोलह वर्णित है (1) गर्भाधान–जिसमे बच्चा गर्भ में आता है। (2) पुंसवन–गर्भ के तीसरे माह में संस्कार होता है। (3) सीमन्तोन्यन–गर्भ के सातवे महीने में किया जाता है संस्कार (4) जातकर्म–जन्म के समय नार छेदन संस्कार (5) नामकरण–बच्चे का नाम रखना। (6) निष्क्रमण–बच्चे को पहली बार घर से निकाला जाता है। (7) अन्नप्राशन–बच्चे को प्रथम वार अन्न ग्रहण कराया जाता है। (8) चूड़ाकरण–बच्चे का बाल काटने का संस्कार (9) कर्ण वेध–बच्चे का कान छेदने का संस्कार (10) विद्यारम्भ–बच्चे को शिक्षा प्रारम्भ करने का संस्कार (11) उपनयन–बच्चे को यज्ञोपवित संस्कार किया जाता है। (12) वेदारम्भ–वेदो की शिक्षा दी जाती है। (13) केशान्त–बालो को काटने का संस्कार (14) समावर्तन–भिक्षा पूर्ण होने पर घर वापसी का संस्कार (15) विवाह संस्कार (16) अंत्योष्टि–इस संस्कार में व्यक्ति को मुक्ति दिलाने के लिए किया जाता है।

▲▲▲

कन्यादान

डॉ रोहित मिश्र
साहित्य विभागाध्यक्ष,
गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ,
गोरखनाथ मंदिर गोरखपुर।

सनातन धर्म में कन्यादान एक महत्वपूर्ण संस्कार है जिसमे पिता अपने पुत्री को वर को सौंपता है और अपने कुल के पूर्वजो को उद्धार के लिए कहता है।

कन्या कनक सम्पन्ना नानाभरण भूषिता।।
दाष्यामि विष्णवे तुभ्यं पितृणां तारणाय च।।

अथार्त इस वचन से सिद्ध होता है कि पितरो का उद्धार कन्यादान से ही सम्भव है। सनातन धर्म कन्यादान को महादान की संज्ञा दी है।

अंत में सनातनी हिन्दू जनमानस से यही प्रार्थना है कि संस्कारो का ज्ञान तथा बच्चो में संस्कार का अनुपालन आवश्यक है। यदि हमारा समाज संगठित एवं समरसता का अभियान अहर्मीश करे तो हमारा कल्याण समाज का कल्याण होगा ही यह सिद्धांत शास्त्रों का है।

▲▲▲

चौरिटेबल ट्रस्ट आओ हाथ बढ़ाया के कार्यालय में कैबिनेट मंत्री डॉ संजय निषाद जी के साथ–साथ गोरखपुर प्रेस क्लब के पूर्व अध्यक्ष मार्कण्डेय मणि त्रिपाठी जी का भी आगमन हुआ।

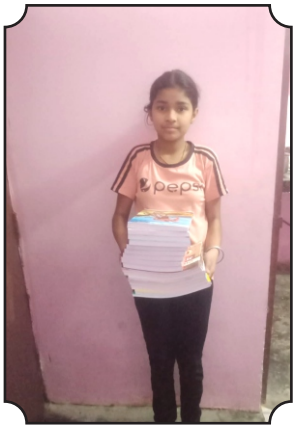

ये वो बच्चे हैं जिनकी शिक्षा की जिम्मेदारी ट्रस्ट ने ले रखी है।

2025 में स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री से संजय पांडेय जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

ट्रस्ट द्वारा समय–समय पर अनेक विषयों पर जागरूकता अभियान चलाया जाता है। इसी कड़ी में जिला अस्पताल के डॉ0 भास्कर अग्रवाल के साथ मिलकर एक कुष्ठ रोग जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया।

कुत्तों द्वारा फैलाए आतंक का शिकार इस बछड़े का ट्रस्ट के सहयोग से इलाज कराया गया।

वेस्ट से बेस्ट बनाने का तरीका बच्चों को सिखाया गया।

बाल गृह जाकर वहाँ पर रह रहे बच्चों के लिए खाद्य सामग्री के साथ बच्चों की मर्जी के मुताबिक उन्हें एक ड्रॉइंग किट बनाकर वितरित किया।

लगातार हो रहे साइबर क्राइम को देखते हुए साइबर टीम के साथ मिलकर ट्रस्ट द्वारा एक साइबर जागरूकता अभियान आयोजित किया गया।

शहर की तमाम संस्थाओं के साथ मिलकर ट्रस्ट के कार्यालय में एक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें सभी संस्थाओं को साथ लेकर बेहतर ढंग से समाज के लिए कार्य करने को लेकर चर्चा की गई।

ट्रस्ट के कार्यालय में एक नि:शुल्क दंत चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ0 अंकित गुप्ता जी मुख्य चिकित्सक के रूप में अपनी सेवाएं दी। इसके साथ–साथ ट्रस्ट के द्वारा पढ़ाए जा रहे सभी जरूरतमंद परिवार के बच्चों में एक हाइजीन किट का वितरण करते हुए उन्हें अपने और अपने आसपास साफ सफाई रखने के लिए एक वर्कशॉप दिया गया।

बहुत कम समय में अपने उत्कृष्ट कार्यों से लोगों के दिलों में अपनी जगह बनाने वाले एसपी सिटी श्री कुमार रणविजय सिंह जी को उनके कार्यालय में सम्मानित किया।

मानसिक रोग से असंतुलित एक लड़की को अन्य सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर पुलिस और जिला अस्पताल के सहयोग से रेस्क्यू करके अस्पताल भिजवाया।

मथुरा में बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री सफलतापूर्वक वितरित करने के लिए भाई प्रिंस कुमार एवं श्री नीरज कुमार को ट्रस्ट के कार्यालय में सम्मानित किया गया।

ट्रस्ट के बच्चों में स्टेशनरी वितरण किया गया।

अक्टूबर 2025 में आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के बच्चों को
दिवाली के पैकेट वितरित करते हुए।

लावारिस मरीजों की देखभाल के लिए जिला चिकित्सालय में अन्य समाजसेवियों के
साथ मिलकर समस्याओं को सीएमएस के संज्ञान में लाते हुए।

2025 में मथुरा में आई बाढ़ से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए अन्य
सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर बाढ़ राहत सामग्री भिजवाए।

बच्चों के द्वारा तैयार की गई कुछ हैंडीक्राफ्ट के सामन।

ट्रस्ट द्वारा सिखाए गए बच्चों के द्वारा करवा चौथ की कुछ थालियां और
अन्य सामान बनवाकर उसे आर्थिक रूप से सपोर्ट करते हुए।

महिलाओं के लिए चलाएं ट्रस्ट द्वारा जीने दो जागरूकता अभियान के अंतर्गत लगातार बढ़ रही छेड़छाड़ की घटनाओं के मद्देनजर एंटी रोमियो टीम के द्वारा ट्रस्ट के बच्चों को वर्कशाप दिया गया।

पर्यावरण दिवस पर ट्रस्ट के सदस्य और बच्चों के साथ मिलकर पौधारोपण करते हुए।

विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर ट्रस्ट के बच्चों द्वारा एक रैली और नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।

बेटियों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में ट्रस्ट के कार्यालय में एक वर्कशॉप का आयोजन किया गया।

ट्रस्ट द्वारा स्वचालित नि:शुल्क सिलाई सेन्टर

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस और होली के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित महिलाओं को सम्मानित करने के साथ–साथ जरूरतमंद बच्चों को होली के पैकेट दिए गए।

चौरिटेबल ट्रस्ट आओ हाथ बढ़ाएं द्वारा आयोजित
श्रमवीर एवं कर्मवीर सम्मान समारोह।

हृदयाघात से पीड़ित वीरसिंह को ई–रिक्शा देकर उनके परिवार के जीवन यापन के लिए ट्रस्ट की तरफ से सहायता दी गई।

ट्रस्ट के कार्यालय में पहलगाम में हुए आतंकी हमले में शहीद हुए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित किया गया।

ट्रस्ट द्वारा अहमदाबाद प्लेन क्रेश में दिवांगत आत्माओं के लिए श्रद्धांजलि सभा।

शहर में ह्यूमन ट्रैफिकिंग का भंडाफोड़ करने वाले रेलवे में कार्यरत श्री जितेंद्र सिंह और सौरभ जी को ट्रस्ट के कार्यालय में सम्मानित किया।

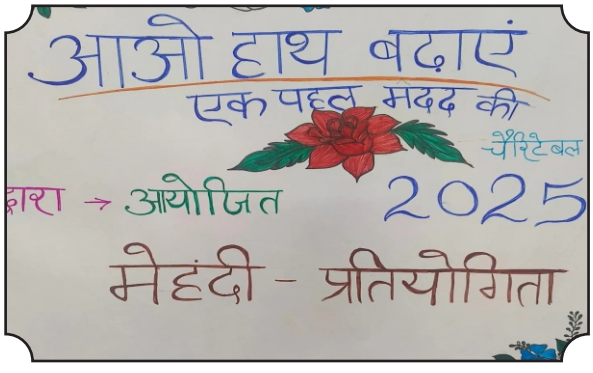

ट्रस्ट द्वारा संचालित ट्यूशन सेंटर में पढ़ने वाली बच्चियों में मेहंदी कंपटीशन का आयोजन कर उन्हें प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार देते हुए उन्हें और अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित किया।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ट्रस्ट के कार्यालय में ध्वजा रोहण कर बच्चों के साथ कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम करके मिष्ठान वितरण किया।

अमर उजाला द्वारा आयोजित तिरंगा रैली में ट्रस्ट की तरफ से जलपान की व्यवस्था करा कर और रंगोली बनाकर अपना सहयोग दिया।

तपती गर्मी में राहगीरों को राहत पहुंचाने के लिए नींबू पानी और शरबत का वितरण ट्रस्ट के सौजन्य से किया

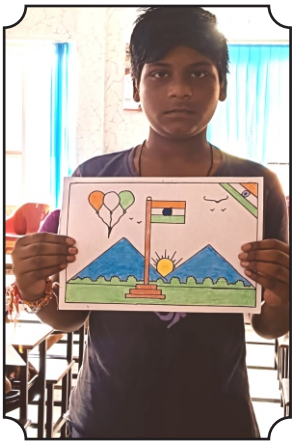

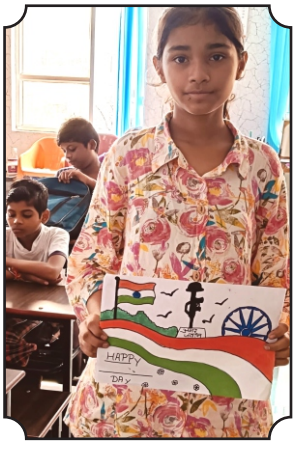

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ट्रस्ट द्वारा संचालित ट्यूशन सेंटर में पढ़ने वाले बच्चों ने अपनी देशभक्ति का को प्रदर्शित करते हुए कुछ सुंदर और मनमोहक चित्र बनाएं।

संभल में रह रही है एक असहाय और अकेली महिला के लिए राहत सामग्री ट्रस्ट के द्वारा भिजवाई गई।

सावन में शिवरात्रि के अवसर पर ट्रस्ट द्वारा एक विशाल भंडारे का आयोजन किया गया।

समय–समय पर बच्चों को योग की भी शिक्षा दी जाती है।

किसी भी दुर्घटना का शिकार होने से बचने के लिए समय–समय पर क्लास में बच्चों को वर्कशॉप दिया जाता है।

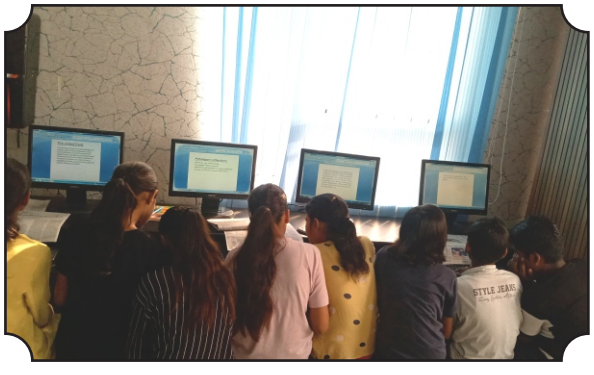

ट्रस्ट के द्वारा बच्चों को कंप्यूटर की शिक्षा भी दी जाती है।

योग दिवस पर योग करते ट्रस्ट के बच्चे।

बसंत पंचमी के अवसर पर चौरिटेबल ट्रस्ट आओ हाथ बढ़ाएं द्वारा दिल्ली रोड पर कढ़ी चावल की विशाल भंडारे का आयोजन किया गया।

चौरिटेबल ट्रस्ट आओ हाथ बढ़ाएं द्वारा संचालित नि:शुल्क ट्यूशन सेंटर में पढ़ने वाले बच्चों को स्वास्थ्य वर्धक खाद्य सामग्री वितरित किया।

गर्मी में आर्थिक रूप से जरूरतमंद परिवार के बच्चों के लिए आइसक्रीम पार्टी का आयोजन ट्रस्ट की तरफ से किया गया।

बच्चों को योग सिखाते हुए महेंद्र सिंह विश्नोई जी।

डॉ0 आशुतोष अग्रवाल जी के सहयोग से मछरिया में एक नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

तीसरी बार हृदय घात से पीड़ित श्री वीर सिंह जी का एपेक्स हॉस्पिटल में ईलाज का पूरा खर्च चौरिटेबल ट्रस्ट आओ हाथ बढ़ाएं द्वारा उठाया गया।

15 अक्टूबर 2025 को एक जरूरतमंद परिवार की बिटिया की शादी के लिए संस्था द्वारा आर्थिक सहयोग के साथ–साथ शादी में दिए जाने वाले सामान से भी सहयोग किया गया।

ट्रस्ट के कार्यालय में दिपावली पूजा।

विल्सोनिया डिग्री कॉलेज में ट्रस्ट का सम्मान।

7 नवंबर 2025 को MRFI द्वारा संस्था को सम्मानित किया गया।

7 नवंबर 2025 को चंद्रावती फिल्म एवं डीएमआर ग्रुप द्वारा ट्रस्ट को सम्मानित किया गया।

14 नवंबर 2025 को बाल दिवस के अवसर पर ट्रस्ट द्वारा संचालित नि:शुल्क ट्यूशन सेंटर में पढ़ने वाले बच्चों के साथ केक काटकर बाल दिवस मनाया गया।

आओ हाथ बढ़ाएं - एक पहल मदद की
(चैरिटेबल ट्रस्ट)
द्वारा आयोजित
Haldi Hath

18 नवंबर 2025 को आयोजित आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की 11 बेटियों के सामूहिक विवाह के उपलक्ष्य में हल्दी मेहंदी संगीत के कार्यक्रम का आयोजन रेड कारपेट में किया गया।

(चैरिटेबल ट्रस्ट)
द्वारा आयोजित
आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के
11 बेटियों के (चौथे वर्ष)
श्री मनोज कुमार
आपके
सहयोग
श्री बॉबी उप्पल
आपके

आओ हाथ बढ़ाएं
(चैरिटेबल ट्रस्ट)
द्वारा आयोजित

18 नवंबर 2025 को आयोजित आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की 11 बेटियों के भव्य सामूहिक विवाह कार्यक्रम झलकियाँ।

कविता

अंत के करीब पहुंच

मनीषा

अंत के करीब पहुंच,
विस्तृत हुए विचार,
अपनी बनाई, पगडंडी निहारे,
और प्रश्न करे हजार,

जीवन की ऊंचाइयों पर,
जीता हर मुकाम,
जीतने की अभिलाषा में,
अपनाया वो एकांत,

शायद दंभ का चरम,
तोड़े, उसके अनुराग,
अलग थलग सा, पड़ा वो,
आज लगे दुर्भाग्य,

नही समझता मानव ये,
कुचक्र का यह प्रभाव,
टूटता, वो अंदर से, जब,
करता, अपनो से, अलगाव,

संभल जा तू, अपना ले,
अपनो का अपनापन,
सब कुछ होगा साथ तेरे,
नही होगा ,जीवन का सार,
.....जीवन का अवलम्ब!

कविता

घर

काम्या पांडेय

मैं इन भरी बैठकों में,
कोई अपना तलाश करता हूँ।
आज में घर से निकल कर,
घर तलाश करता हूँ।

हर शख्स पूछता है मुझसे–
कि तुम दूर–दराज जाकर,
ये जो दर–दर भटकते हों,
कहते हो घर छोड़कर, घर ढूंढोगे,
मियां तुम भी अजीब बात करते हो।

मैं इस टपकती छत की जगह,
एक नर्म छांव तलाश करता हूँ।
आज मैं घर से निकलकर,
घर तलाश करता हूँ।

कई दफा लोग पूछा करते हैं–
आखिर क्यों नजरें बचाकर निकलते हो,
शामों में महफिलें जमती हैं जहाँ ?
अब कैसे बताएं कि लौटकर जाने की बारी में,
हम आखिर लौटकर जाएंगे कहाँ ?

मैं अब खुद को खोजने की आड़ में,
अक्सर अपनों का पता भूल जाता हूँ।
रुकता हूं, ठहरता हूं, याद करता हूँ।
मगर शायद खोजते–खोजते फिर
कहीं भूल आता हूँ।
इन आसमां सी नदियों में,
महज पक्की जमीं तलाश करता हूँ।
अब बस आज घर से निकल कर,
घर तलाश करता हूँ।

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक, जय हे
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग।
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि तरंग।।
तव शुभ नामे जागे,
तब शुभ आशिष माँगे
गाहे तव जय गाथा
जन-गण-मंगल दायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे!